International Journal of Research in Hindi
www.hindijournal.in
ISSN: 2582-3493
Received: 29-11-2021, Accepted: 15-12-2021, Published: 31-12-2021
Volume 3, Issue 4, 2021, Page No. 18-19

मलिक मुहम्मद जायसी–वाङ्मय में सांप्रदायिक सद्भाव

अर्चना शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, हिंदी विभाग, रामजस कॉलेज, दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली, भारत

सारांश
प्रस्तुत शोध–आलेख का ध्येय भक्तिकालीन सूफी काव्यधारा के प्रवर्तक महाकवि मालिक मुहम्मद जायसी के व्यक्तित्व और कृतित्व सहित उनके काव्य में साम्प्रदायिक सद्भावना के मर्म को उद्घाटित करना रहा है। मालिक मुहम्मद जायसी के काव्य का महत्वपूर्ण वैशिष्ट्य 'रहस्यवाद' है। जायसी नाथ कवियों की भाँति ईश्वर की कल्पना अपने भीतर ही करते हैं। शोध–आलेख के माध्यम द्वारा मालिक मुहम्मद जायसी के काव्य में साम्प्रदायिक सद्भावना के अनेकानेक बिंदुओं की खोज एवं प्रस्तुतिकरण लिपिबद्ध किया गया है ।

मूल शब्दः सद्भाव, भक्तिकाल, प्रेममार्गी, संस्कृति, सूफी, मध्यकाल

प्रस्तावना

मलिक मुहम्मद जायसी को 'जायस का मानस', 'इन्सान–ए–कामिल' अथवा संकल्पक्षम सहित प्रतिभावान रचनाकार कहा जाए तो अतिश्योक्ति न होगी।

हिंदी साहित्य में जायसी भारतीय समवेत संस्कृति तथा सांप्रदायिक सद्भाव की एक जीवंत प्रतिमूर्ति हैं। जायसी की इस संवेदनशील साहित्य–साधना का प्राण तत्त्व – 'प्रेम' है।

मलिक मुहम्मद जायसी भक्तिकालीन प्रेममार्गी शाखा के प्रतिनिधि महाकवि थे। जायसी साहित्य भक्तिकाल में तथा वर्तमान राष्ट्रीय तथा अंतरराष्ट्रीय संदर्भों में सांप्रदायिक सद्भाव की दृष्टि से सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण हैं।

भारतीय साहित्य में भक्तिकाल राजनैतिक संघर्ष तथा सांस्कृतिक संपर्क का संक्रांति–काल था। इस काल की अत्यंत संवेदनशील मूल समस्या संस्कृति सहबोध तथा सांप्रदायिक सद्भावना थी। हिंदू–मुसलमानों के शांतिपूर्ण सह–अस्तित्व तथा सांस्कृतिक विविधता में भावात्मक एकता की प्रतिष्ठा इस युग का मूल मुद्दा था।

भारतीय महाकवि जायसी के व्यक्तित्व की मूल प्रेरणा समन्वय–भावना थी। जायसी सहृदय, सहयोग तथा स्वाभिमान को आधार मानकर सृजन–कार्य में संलग्न होते थे। वे एक आशावादी, आस्थावादी तथा मानवतावादी महान पुरुष थे। आचार्य रामचंद्र शुक्ल 'हिंदी साहित्य का इतिहास' में लिखते हैं –

"कबीर ने अपनी झाड़ फटकार के द्वारा हिंदुओं और मुसलमानों के कट्टरपन को दूर करने का जो प्रयास किया वह अधिकतर चिढ़ानेवाला सिद्ध हुआ, हृदय को स्पर्श करने वाला नहीं। मनुष्य–मनुष्य के बीच जो रागात्मक संबंध है वह उसके द्वार व्यक्त न हुआ। अपने नित्य के जीवन में जिस हृदयाभास का अनुभव मनुष्य कभी–कभी किया करता है, उसकी अभिव्यंजना उससे न हुई। कुतुबन, जायसी आदि इन प्रेम कहानी के कवियों ने प्रेम का शुद्ध मार्ग दिखाते हुए उन सामान्य जीवन दिशाओं को सामने रखा जिनका मनुष्य मात्र के हृदय पर एक सा प्रभाव दिखाई पड़ता है।" ऐसा न था कि रामचंद्र शुक्ल ने जायसी की सीमाओं को न परखा था। आचार्य रामचंद्र शुक्ल लिखते हैं –

"पर इस प्रसंग में भी कवि ने श्लेष और अन्योक्ति आदि के द्वारा उभयपक्ष का वाक्चातुर्य दिखाने का आयोजन बांधा है, जिससे पाठक का कुछ भी मनोरंजन नहीं होता। जैसा कि आगे दिखाया जायेगा, जायानी की इस प्रवृत्ति के कारण प्रबंध के रसपूर्ण प्रवाह में बाधा पड़ी है।"

संकीर्ण एवं संकुचित स्वार्थों से विरहित सद्भावनापूर्ण 'प्रेम' में ही जायसी जीवन की सार्थकता समझते थे। वे इश्के मजाजी (लौकिक प्रेम) व इश्के हकीकी (अलौकिक प्रेम) में हिमायती समर्पित सूफी कवि थे। जायसी ऐसे ही प्रेम–पुजारी थे। जायसी के अनुसार –

हौं तो दोऊ बीच की काई।
जब छूटी तब एक होइ जाई।
हिय कर दरपन मन कर मंजन।
देखु आपु महँ आपु निरंजन।।

वास्तव में इसी प्रेम–साधना की वर्तमान जीवन में सार्थकता है –

जियतहि जौ रे मरै एक बारा।
पुनि कत मीचु को मारै पारा।।

इस आधार पर ही आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने लिखा था –
"कबीर ने केवल भिन्न प्रतीत होती हुई परोक्ष सत्ता की एकता का आभास दिया था। प्रत्यक्ष जीवन की एकता का दृश्य सामने रखने की आवश्यकता बनी थी। यह जायसी द्वारा पूरी हुई।"

प्रेम के प्रति जायसी का सर्वस्व समर्पित था। त्यागमय प्रेम ही सामाजिक सामंजस्य का आधार है। त्यागमय प्रेम के प्रति उनकी अगाध आस्था थी। जायसी के अनुसार मनुष्य मुट्ठी–भर राख का पुतला है। यह प्रेम ही उसे एक दिव्य इंसान बना देता है –

मानुष प्रेम गएउ बैकुंठी।
नाहिं त काह छार एक मूँठी।।

इस संदर्भ में मलिक मुहम्मद जायसी की अन्य महत्त्वपूर्ण पंक्तियाँ भी द्रष्टव्य हैं–

"प्रेम पंथ जौ पहुँचे पाराँ।
बहुरि न आइ मिलै एहि छाराँ।।"

जायसी मानव–मंगल तथा मानव–सेवा को जीवन का पुनीत प्रयोजन मानते थे। वे इसे मानव जीवन का सार तथा परम सौभाग्य समझते थे। उनका यह अंतः साक्ष्य इस संबंध में अनुकरणीय है–

"सेवा महँ जा कर मन लागू।
दिन–दिन बाढ़ै अधिक सोहागू।।"

आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने इस तत्त्व बोध के संदर्भ में ही लिखा था–
"जायसी ने यद्यपि इश्क के दास्तानवाली मसनवियों के प्रेम के स्वरूप को प्रधान रखा है पर बीच–बीच में भारत के लोक व्यवहार–संलग्न स्वरूप का मेल किया है।"
जायसी की इस उदात्त जीवन–दृष्टि की तुलना महादेवी वर्मा की इन पंक्तियों से की जा सकती है –
'मनुष्य के आँसुओं, फूलों पर पड़े हुए ओस कणों तथा मेघ की बूंदों का एक ही कारण तथा एक ही मूल्य है।"
अर्थात् जायसी भावात्मक रूप से भारतीय समवेत संस्कृति तथा सर्वात्मवादी जीवन–दर्शन के स्तुत्य सूत्र हैं। जायसी सकारात्मक तथा सारग्रही स्वभाव से संपन्न तथा सच्चे मनुष्य थे।

निष्कर्ष

अस्तु, महाकवि मलिक मुहम्मद जायसी का यह जीवन–दर्शन अत्यंत उदार तथा उदात्त है। यह जीवन–दृष्टि, देश, काल, व्यक्ति, वर्ग तथा वर्ण की सीमाओं से परे एक सार्वभौम मूल्य–व्यवस्था है, जिसका मूल–मंत्र है – सहृदयतापूर्ण सांप्रदायिकत सद्भावना।

संदर्भ

1. हिंदी साहित्य का इतिहासः आचार्य रामचंद्र शुक्लः पुनरावृत्तिः 2013ः लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–67
2. जायसीः: रामचंद्र शुक्लः द्वितीय संस्करणः 2009ः लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–65
3. हिंदी साहित्य का इतिहासः आचार्य रामचंद्र शुक्लः पुनरावृत्तिः 2013ः लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–67
4. पद्मावत, छंद 146/6
5. चित्ररेखा, पृष्ठ–112
6. जायसीः: रामचंद्र शुक्लः द्वितीय संस्करणः 2009ः लोकभारती प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ–47